श्री कामेश्वर सिंह (सहायक प्रोफेसर)
राजनीति विज्ञान, रोहतास महिला कॉलेज सासाराम
वर्ग - बी० ए० पार्ट - III (प्रतिष्ठा)
पत्र संख्या - VI ; यूनिट नं० - 03



प्रमुख राजनीतिक चिंतक - डा० बी०के० झा
दिनांक - 30-05-2020

**प्रश्न :- कौटिल्य के राजा संबंधी विचारों का वर्णन करें।**

उत्तर :- कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार राजा शासन की धुरी है। राजा ही शासन का संचालन करता है और उसको गति प्रदान करता है। कौटिल्य का विश्वास है कि आदिमकाल की अराजकतापूर्ण स्थिति से त्राण पाने के लिए लोगों ने आपस में समझौता कर - वैवस्वत मनु को राजा बनाया। इस प्रकार प्रथम राजा की उत्पत्ति मत्स्य न्याय की स्थिति से तंग आकर मनुष्यों की पारस्परिक समझौता से हुई।

**राजा के गुण :-**

कौटिल्य ने राजा के आवश्यक गुणों का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है। उनके अनुसार राजा को कुलीन, स्वस्थ एवं शास्त्र का अनुसरण करने वाला होना चाहिए। उसे सोलह अभिगामिक गुणों, आठ प्रज्ञा गुणों, चार उत्साह गुणों एवं अन्य आत्मसंयम गुणों से विभूषित होना चाहिए। उदाहरण स्वरूप, अभिगामिक गुणों के अनुसार राजा को धार्मिक, सत्यवादी, अदीर्घसूत्री, दृढ़निश्चयी, विनयी, विवेकी और कृतज्ञ होना चाहिए। इसके अतिरिक्त उसे शुश्रूषा, श्रवण, ग्रहण, धारण, आदि प्रज्ञा गुणों से सम्पन्न होना चाहिए।

पुनः उत्साह गुणों के अनुसार राजा को निर्भीक, पापाचार के प्रति असहिष्णु, शीघ्र कार्य करने के लिए तत्पर एवं निपुण होना चाहिए। आत्मसंयम गुणों के अनुसार उसे स्मृतिमान, मतिमान, बलवान, संयमी, प्रियभाषी एवं काम-क्रोधादि से अलग रहना चाहिए। इस प्रकार कौटिल्य ने राजा के गुणों का इतना विस्तृत वर्णन किया है कि जर्मन चिंतक ने इन गुणों को 'रोमांचपूर्ण आविष्कार' की संज्ञा दी है।

Scanned by CamScanner

राजा की शिक्षा-दीक्षा :— उपर्युक्त गुणों से सम्पन्न राजा की (Page-02)

शिक्षा-दीक्षा पर भी कौटिल्य ने बल दिया है। उसने कहा है कि- "जिस प्रकार घुन लगी हुई लकड़ी शीघ्र नष्ट हो जाती है, उसी प्रकार जिस राजकुल के राजकुमार शिक्षित नहीं होते, वह राजकुल बिना किसी युद्ध आदि के स्वयं ही नष्ट हो जाता है।" यही कारण है कि कौटिल्य के अनुसार राजा को त्रयी, वार्ता, दंडनीति, एवं आन्वीक्षिकी विद्याओं का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। त्रयी विद्या के द्वारा राजा वर्ण एवं आश्रम व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त कर उसे सुरक्षित रखने का प्रयास करता है। इससे उसे धर्म और अधर्म का भी ज्ञान प्राप्त होता है।

वार्ता के अध्ययन से राजा राज्य की आर्थिक समस्याओं को समझकर उन्हें नियंत्रित करता है। दंडनीति में सुशिक्षित राजा ही अपने राज्य में शांति और सुव्यवस्था स्थापित कर लोक कल्याण में वृद्धि करता है। आन्वीक्षिकी विद्या राजा की बुद्धि को तीव्र करती है, उसे वाक्चातुरी एवं कामकाज में पटुता प्रदान करती है, विपत्तियों एवं कठिनाइयों में उसकी बुद्धि को ठिकाने रखती है एवं उसे सत्य और असत्य का ज्ञान प्रदान करती है।

राजा के लिए आन्वीक्षिकी (दर्शनशास्त्र) का अध्ययन भी आवश्यक है, इसका अर्थ यह नहीं है कि प्लेटो की भाँति कौटिल्य सिर्फ दार्शनिकों को ही राजा बनाना चाहता है। जहाँ प्लेटो का दार्शनिक शासक सिर्फ कल्पना के स्वप्निल जगत में विचरण करता है, दर्शन में शिक्षित कौटिल्य का राजर्षि वास्तविक जगत में पैदा हो सकता है। भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत में ऐसे बहुत से राजा हुए जिन्होंने दर्शन का पूर्ण अध्ययन किया। स्वयं चन्द्रगुप्त मौर्य जिसका कौटिल्य प्रधानमंत्री था, को दर्शन का पूर्ण ज्ञान था। अतः एवं राजा के लिए दर्शन का अध्ययन सिर्फ एक सैद्धान्तिक आदर्शवाद ही नहीं, अपितु वास्तविक वास्तविकता है। ........

राजपुत्र को भिन्न-भिन्न विद्या विभिन्न आचार्यों से सीखनी चाहिए। मुंडन संस्कार हो जाने के बाद उसे अक्षरों लिखने तथा गिनती का अभ्यास करना चाहिए। विद्यार्थी जीवन में उसे कम से कम सोलह वर्षों तक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। क्रमशः..........